जब लड़ाई और तेज़ हो जाती है!

रविवार का संदेश

रविवार, 19 अप्रैल 2026 – संदेश की रूपरेखा

जब जीवन की लड़ाइयाँ तीव्र हो जाएँ, तब क्या करें?

कभी-कभी ऐसा लगता है कि स्थिति शांत होने के बजाय और भी भयंकर हो जाती है। लड़ाई समाप्त होने के बजाय लंबी होती जाती है और उसका कोई अंत दिखाई नहीं देता।

इफिसियों 6:10-18 (HINOVBSI)

10 अन्त में, हे भाइयो, प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो।

11 परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो, ताकि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको।

12 क्योंकि हमारा मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानताओं से, अधिकारियों से, इस संसार के अंधकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।

13 इस कारण परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो, ताकि तुम बुरे दिन में सामना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको।

14 सो सत्य से अपनी कमर कसकर, और धार्मिकता की झिलम पहनकर,

15 और मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहनकर,

16 और सब के ऊपर विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो, जिससे तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको।

17 और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो ।

18 और हर समय और हर प्रकार की प्रार्थना और विनती आत्मा में करते रहो, और इसी लिए जागते रहो।

हम आत्मिक संघर्ष में हैं

जीवन की लड़ाइयों का एक आत्मिक पहलू भी है। यद्यपि प्राकृतिक पक्ष भी है, परन्तु कई संघर्ष आत्मिक स्तर पर उत्पन्न होते हैं।

शत्रु चोरी करने, हत्या करने और नाश करने आता है

(यूहन्ना 10:10 के अनुसार) शैतान हमारा भला छीनना और नष्ट करना चाहता है। परन्तु यीशु हमें जीवन और बहुतायत का जीवन देने आए हैं।

युक्तियाँ, बुरा दिन और जलते हुए तीर

- **युक्तियाँ** – शैतान की चालाक और धोखे भरी योजनाएँ
- **बुरा दिन** – कठिन , पीड़ादायक और संघर्ष भरा समय
- **जलते हुए तीर** – लगातार हमलों की वर्षा

जब लड़ाई तीव्र हो जाए:

1. *प्रभु में मजबूत बनें*

परमेश्वर के साथ अपने संबंध को गहरा करें—वचन, प्रार्थना और आराधना में।
उसकी पुनरुत्थान की सामर्थ्य पर निर्भर रहें जो हमारे भीतर कार्य करती है।

---

2. *अपने पूरे हथियार का उपयोग करें*

परमेश्वर ने जो कुछ दिया है—सबका उपयोग करें:

- विश्वास
- व च न
- प्रार्थना
- स्तुति
- यीशु के नाम का अधिकार
- लहू की सामर्थ्य

---

3. *डटे रहें*

- स्थिर रहें
- अडिग रहें
- पीछे न हटें

“सब कुछ कर लेने के बाद भी खड़े रहो”

---

4. *संघर्ष करें (कुश्ती लड़ें)*

यह एक निरंतर युद्ध है—एक बार का नहीं।
परन्तु हम नष्ट नहीं होते—परमेश्वर हमें सदैव विजय दिलाता है।

---

5. *जलते हुए तीरों को बुझाएँ*

विश्वास की ढाल से हर हमले को निष्फल करें।
परमेश्वर के वचन में स्थिर रहें—हर तीर बुझ जाएगा।

---

6. *आक्रमण करें*

- आत्मा की तलवार (प र मे श्व र का व च न) का उपयोग करें
- परमेश्वर के वादों को बोलते रहें
- हर बार बोलने से शत्रु पर प्रहार होता है

व्यावहारिक निर्देश:

- परमेश्वर के वचन पर केंद्रित रहें
- वचन को बोलते रहें
- हर जलते हुए तीर को बुझाते रहें
- स्तुति करते रहें
- अच्छे लोगों के साथ रहें
- सतर्क बने रहें